

श्रीमद्भागवत स्कन्ध 8 अध्याय 23: बली सुतल में

18 September 2026

🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



वरुण के पाशों से मुक्त होकर, आँखें आँसुओं से भरी और वाणी प्रेम से अवरुद्ध, महान राजा बली भगवान के समक्ष हाथ जोड़ते हैं — विनम्र, आशीर्वादित, और अपनी पराजय में उससे कहीं अधिक धनी जितने वे कभी अपने सिंहासन पर थे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विङ्गडम् में आपका पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिमयी यात्रा। यह तेईसवाँ अध्याय वामन-कथा को उसके शान्त और आनन्दमय समापन तक ले जाता है, जिसमें बली की कृतज्ञता, प्रह्लाद का विस्मय और शुक्राचार्य की समर्पण-भावना भगवान की असीम कृपा की उपस्थिति में प्रकट होते हैं।

अध्याय को जानकारो

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 8 (आठवाँ स्कन्ध)
- अध्याय: 23 (तेईसवाँ अध्याय)
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित से कहते हुए — बली, प्रह्लाद, भगवान और शुक्राचार्य के वचन सहित
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: नर्मदा पर भृगुकच्छ में बली की यज्ञभूमि, और सुतल-लोक
- केन्द्रीय विषय: बली की कृतज्ञता एवं मुक्ति, उनका सुतल में प्रवेश, इन्द्र को स्वर्ग की पुनर्प्राप्ति, यज्ञ की पूर्णता, और वामन-कथा के श्रवण की महिमा
- प्रमुख श्लोक श्रेणी: स्कन्ध 8, अध्याय 23, श्लोक 1–31
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

बाईसवें अध्याय में, बँधे बली ने भगवान के तीसरे चरण के लिए अपना ही मस्तक अर्पित किया और भगवान को असुरों के सच्चे हितैषी के रूप में आशीर्वाद दिया। उनकी रानी विन्ध्यावली और ब्रह्मा ने उनकी मुक्ति की याचना की, और भगवान ने अपनी कृपा का रहस्य प्रकट किया — कि वे अपने प्रियतम भक्तों से धन केवल प्रेमवश हरते हैं। परास्त राजा को उन्होंने सुतल, इन्द्र-पद का भविष्य, और अपनी निरन्तर उपस्थिति का वचन प्रदान किया। यह अध्याय बली के कृतज्ञ उत्तर से आरम्भ होता है।

बली की कृतज्ञ स्तुति

जिन भगवान ने इस प्रकार कहा था, उनसे उदारचेता बली ने, समस्त पुण्यात्माओं द्वारा सम्मानित, जुड़े हाथों और अवरुद्ध वाणी से उत्तर दिया, उनके नेत्र आँसुओं से धुँधले और कण्ठ भाव से रूँधा हुआ।

श्रीबलिरुवाच

अहो प्रणामाय कृतः समुद्यमः

प्रपन्नभक्तार्थविधौ समाहितः ।

यल्लोकपालैस्त्वदनुग्रहोऽमरै-

रलब्धपूर्वोऽपसदेऽसुरेऽर्पितः ॥ २ ॥

श्रीबलिरुवाच अहो प्रणामाय कृतः समुद्यमः प्रपन्नभक्तार्थविधौ समाहितः यल्लोकपालैस्त्वदनुग्रहोऽमरै- रलब्धपूर्वोऽपसदेऽसुरेऽर्पितः

अर्थ: बली ने कहा — अहो, आपको प्रणाम करने का मात्र एक निष्कपट प्रयास ही वह वरदान प्राप्त करा देता है जिसे आपकी शरण में आए भक्त चाहते हैं; क्योंकि उसी प्रयास ने मुझ जैसे नीच असुर को वह कृपा दिला दी है जो कभी लोकपालों और देवताओं को भी प्राप्त न हुई थी। (स्कन्ध 8, अध्याय 23, श्लोक 2)

बली सुतल में प्रवेश करते हैं और इन्द्र को स्वर्ग लौटाया जाता है

इस प्रकार कहकर, बली ने भगवान हरि को, और फिर ब्रह्मा तथा भगवान शिव को प्रणाम किया, और — अब बन्धन से मुक्त और आनन्द से पूर्ण — अन्य असुरों सहित सुतल में अपना शासन ग्रहण करने चल पड़े। और इस प्रकार इन्द्र को स्वर्ग का राज्य लौटाकर तथा अदिति की कामना पूर्ण करके, भगवान ने इन्द्र के छोटे भाई और रक्षक के रूप में समस्त ब्रह्माण्ड पर शासन किया।

एवमिन्द्राय भगवान् प्रत्यानीय त्रिविष्टपम् ।

पूरयित्वादितेः काममशासत् सकलं जगत् ॥ ४ ॥

एवमिन्द्राय भगवान् प्रत्यानीय त्रिविष्टपम् पूरयित्वादितेः काममशासत् सकलं जगत्

अर्थ: स्वर्ग के राज्य को उसके यथार्थ अधिपति को लौटाकर और अदिति की माता-सुलभ कामना को तृप्त करके, भगवान ने सम्पूर्ण सृष्टि का प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया। (स्कन्ध 8, अध्याय 23, श्लोक 4)

प्रह्लाद भगवान की कृपा की प्रशंसा करते हैं

अपने पौत्र बली को — अपने वंश के रक्षक को — समस्त बन्धन से मुक्त और भगवान की कृपा का पात्र बना देख, भक्ति में डूबे प्रह्लाद विस्मय से भगवान से बोले।

श्रीप्रह्लाद उवाच

नेमं विरिज्यो लभते प्रसादं

न श्रीर्न शर्वः किमुतापरेऽन्ये ।

यन्नोऽसुराणामसि दुर्गपालो

विश्वाभिवन्द्यैरभिवन्दिताङ्घ्रिः ॥ ६ ॥

श्रीप्रह्लाद उवाच नेमं विरिज्यो लभते प्रसादं न श्रीर्न शर्वः किमुतापरेऽन्ये यन्नोऽसुराणामसि दुर्गपालो विश्वाभिवन्द्यैरभिवन्दिताङ्घ्रिः

अर्थ: प्रह्लाद ने कहा — यह कृपा न ब्रह्मा को प्राप्त है, न श्री को, न भगवान शिव को, फिर औरों की तो बात ही क्या — कि आप, जिनके चरण विश्व-वन्द्यों द्वारा भी वन्दित हैं, हम असुरों के रक्षक बन जाएँ। (स्कन्ध 8, अध्याय 23, श्लोक 6)

प्रह्लाद ने कहा कि भगवान के चरण-कमलों के मधु की सेवा से ही ब्रह्मा तथा अन्य लोकपाल अपनी शक्तियों का भोग करते हैं; अतः उन्हें और भी अधिक विस्मय हुआ कि दुष्ट कुल में जन्मे और बुरे मार्गों पर चलने वाले भी भगवान की कृपा-दृष्टि के पात्र बना दिए जाएँ। इसमें उन्होंने समझा कि भगवान — जो सबके निष्पक्ष आत्मा हैं — कल्पवृक्ष का सार-स्वभाव प्रकट करते हैं, जो उन सबकी कामना पूर्ण करता है जो उसकी शरण लेते हैं।

यहाँ स्वाभाविक रूप से एक प्रश्न उठता है जो हर भक्त कभी-न-कभी पूछता है: यदि भगवान प्रत्येक हृदय में समान रूप से विराजमान हैं, तो वे किसी को अधिक कृपा और किसी को कम क्यों देते हैं? प्रह्लाद के विस्मय का उत्तर यही है कि भगवान की दृष्टि कभी नहीं डगमगाती — वे असुर और देवता दोनों के भीतर एक ही निष्पक्ष साक्षी के रूप में विराजमान हैं — किन्तु कल्पवृक्ष उसे कुछ नहीं नकारता जो उसकी छाया में आता है, जबकि जो कभी उसके निकट ही नहीं आता उसे कुछ प्राप्त नहीं होता। भेद वृक्ष के पक्षपात में नहीं, अपितु साधक की शरणागति में है। इसी प्रकार भगवान की समदृष्टि अखण्ड बनी रहती है, फिर भी वे उन्हीं असुरों के रक्षक बन जाते हैं जिन्होंने कभी उनका विरोध किया था: यह बली और प्रह्लाद का जन्म या पद नहीं, अपितु उनकी शरणागति है, जो वह कृपा खींच लाती है जिसे जन्म कभी अर्जित नहीं कर सकता (श्लोक 8)।



भक्ति में डूबे सन्त प्रह्लाद उस कृपा के आश्चर्य की प्रशंसा करते हैं जो कभी ब्रह्मा, श्री अथवा भगवान शिव को भी नहीं मिली — कि भगवान स्वयं असुरों के रक्षक बन जाएँ (श्लोक 5-8)।

भगवान प्रह्लाद को आशीर्वाद देते हैं

भगवान ने प्रसन्न होकर प्रह्लाद से कहा कि वे सुतल जाएँ और वहाँ अपने पौत्र के साथ आनन्दित हों, अपने स्वजनों को हर्ष प्रदान करते हुए; और उन्होंने वचन दिया कि प्रह्लाद उन्हें वहाँ सदा गदा हाथ में लिए उपस्थित देखेंगे, उस दर्शन के अनन्त आनन्द से उनका अज्ञान धुल जाएगा। जुड़े हाथों और झुके मस्तक से भगवान की आज्ञा स्वीकार करके, प्रह्लाद — समस्त असुर-सेनाओं के सेनापति — ने श्रद्धापूर्वक भगवान की परिक्रमा की और, भगवान की अनुमति से, बली सहित पाताल-लोक में प्रवेश किया।



भगवान द्वारा आशीर्वादित और उनकी निरन्तर उपस्थिति का वचन पाकर, प्रह्लाद और मुक्त बली श्रद्धापूर्वक विदा लेते हैं और साथ मिलकर सुतल के देदीप्यमान लोक में चले जाते हैं (श्लोक 9-12)।

शुक्राचार्य यज्ञ पूर्ण करते हैं

तब भगवान हरि ने ऋषि उशना — बली के गुरु शुक्राचार्य — से कहा, जो वेदज्ञों की सभा में ऋत्विजों के मध्य निकट ही बैठे थे, कि वे अपने शिष्य के यज्ञ में जो कुछ अधूरा रह गया है उसे पूर्ण करें। शुक्र ने उत्तर दिया कि उसके यज्ञ में तनिक भी दोष नहीं हो सकता जिसने स्वयं यज्ञपति भगवान का अपने समस्त द्रव्य से पूजन किया हो, क्योंकि भगवान के नाम का संकीर्तन प्रत्येक कमी को पूर्ण कर देता है।

मन्त्रतस्तन्त्रतश्छिद्रं देशकालार्हवस्तुतः ।

सर्वं करोति निश्छिद्रमनुसङ्कीर्तनं तव ॥ १६ ॥

मन्त्रतस्तन्त्रतश्छिद्रं देशकालार्हवस्तुतः सर्वं करोति निश्छिद्रमनुसङ्कीर्तनं तव

अर्थ: आपके नाम का संकीर्तन ही प्रत्येक दोष को निर्दोष कर देता है — मन्त्र में, विधि में, देश और काल में, ऋत्विजों की योग्यता में, अथवा प्रयुक्त सामग्री में। (स्कन्ध 8, अध्याय 23, श्लोक 16)

तथापि, चूँकि स्वयं भगवान ने ऐसा कहा था, शुक्राचार्य ने घोषित किया कि वे आज्ञा का पालन करेंगे, क्योंकि भगवान के वचन का पालन ही सबका परम कल्याण है। और इस प्रकार, श्रीहरि की आज्ञा को सहर्ष स्वीकार करके, ऋषि ने अन्य ब्राह्मण-सन्तों की सहायता से बली के यज्ञ में जो शेष था उसे पूर्ण किया।



भगवान की आज्ञा से, ऋषि शुक्राचार्य, अन्य ब्राह्मण-सन्तों सहित, बली के यज्ञ में जो अधूरा रह गया था उसे पूर्ण करते हैं, यह पुष्टि करते हुए कि भगवान के नाम का संकीर्तन प्रत्येक दोष को पूर्ण कर देता है (श्लोक 13-18)।

भगवान वामन उपेन्द्र बनाए जाते हैं और देवता स्वर्ग पुनः पाते हैं

इस प्रकार बली से पृथ्वी माँगकर और उसे अपने बड़े भाई बलशाली इन्द्र को लौटाकर, भगवान का सम्मान प्रजापतिपति ब्रह्मा ने, देवताओं, ऋषियों, पितरों और मनुओं सहित, तथा दक्ष, भृगु, अंगिरा, सनत्कुमार और भगवान शिव सहित किया। कश्यप और अदिति के हर्ष तथा समस्त प्राणियों के कल्याण के लिए, उन्होंने दिव्य वामन को समस्त लोकों और उनके पालकों का अधीश्वर, वेदों, धर्म, यश और समस्त मंगलों का रक्षक — उपेन्द्र, इन्द्र का छोटा भाई — बना दिया। इस पर समस्त प्राणी अत्यन्त आनन्दित हुए। तब, ब्रह्मा की अनुमति से, इन्द्र और लोकपालों ने भगवान को अपने आगे रखकर उन्हें एक दिव्य विमान में स्वर्ग ले गए; और इन्द्र, जिसका भय अब मिट चुका था और जो भगवान वामन की भुजाओं से रक्षित था, परम महिमा से विभूषित होकर आनन्दित हुआ।



उपेन्द्र बने भगवान वामन की भुजाओं से रक्षित, इन्द्र को एक दिव्य विमान में उसके स्वर्गिक सिंहासन पर वापस ले जाया जाता है, और देवता महान आनन्द के साथ स्वर्ग पुनः प्राप्त करते हैं (श्लोक 19-25)।

इस कथा के श्रवण की महिमा

ब्रह्मा, भगवान शिव, सनत्कुमार, भृगु आदि ऋषि, पितर और समस्त प्राणी अपने-अपने लोकों को लौट गए, भगवान के परम अद्भुत कर्म का गान करते हुए और अदिति की स्तुति करते हुए। तब शुकदेव ने परीक्षित से कहा कि विशाल डग भरने वाले भगवान की समस्त कथा, जो सुनने वालों के पापों को हर लेती है, अब सुनाई जा चुकी है; कि कोई मर्त्य कभी भगवान की महिमा का अन्त नहीं पा सकता; और कि जो कोई उनके अवतार की यह पवित्र कथा सुनता है वह परम गति प्राप्त करता है।

य इदं देवदेवस्य हरेरद्भुतकर्मणः ।

अवतारानुचरितं शृण्वन् याति परां गतिम् ॥ ३० ॥

य इदं देवदेवस्य हरेरद्भुतकर्मणः अवतारानुचरितं शृण्वन् याति परां गतिम्

अर्थ: जो कोई देवाधिदेव श्रीहरि की, अद्भुत कर्मों वाले, इस अवतार-कथा को सुनता है, वह परम गति प्राप्त करता है। (स्कन्ध 8, अध्याय 23, श्लोक 30)

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भक्त अपनी हानि नहीं, भगवान की कृपा गिनता है। मुक्त किन्तु अपने राज्य से रहित होकर, बली केवल उस कृपा के आश्चर्य की बात करते हैं जो कभी लोकपालों को भी नहीं मिली — अपने सौभाग्य को भगवान के सामीप्य से मापते हुए (श्लोक 2)।
2. भगवान के अवतार संसार का सन्तुलन पुनः स्थापित करते हैं। बली से पृथ्वी माँगकर, भगवान इन्द्र को स्वर्ग लौटाते हैं और अदिति की कामना पूर्ण करते हैं, यह दिखाते हुए कि उनकी लीला सदा सबके कल्याण की ओर काम करती है (श्लोक 4)।

3. दिव्य कृपा पद से अर्जित नहीं होती। प्रह्लाद विस्मित होते हैं कि जो कृपा ब्रह्मा, श्री अथवा शिव को भी नहीं मिली वह असुरों को प्रदान की जाए, यह शिक्षा देते हुए कि भगवान अपनी कृपा उन सबको उदारता से देते हैं जो उनकी शरण लेते हैं (श्लोक 6-8)।

4. भगवान का नाम प्रत्येक कर्म को पूर्ण कर देता है। शुक्राचार्य घोषित करते हैं कि भगवान के नाम का संकीर्तन यज्ञ के प्रत्येक दोष को पूर्ण कर देता है, पवित्र नाम की परम पावन शक्ति प्रकट करते हुए (श्लोक 16)।

5. भगवान की कथा का श्रवण परम गति की ओर ले जाता है। यह अध्याय इस वचन के साथ समाप्त होता है कि जो कोई भगवान के अवतार की कथा सुनता है वह पाप से मुक्त होकर परम गति प्राप्त करता है (श्लोक 28-30)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

वामन-कथा किसी विजय से नहीं, बल्कि एक घर-वापसी से समाप्त होती है। बली, जो तीनों लोकों के शासक के रूप में आरम्भ हुए और एक पाताल-प्रदेश के शासक के रूप में समाप्त होते हैं, वस्तुतः कुछ नहीं खोते और सब कुछ पा लेते हैं: उनकी आँखों के आँसू शोक के नहीं बल्कि अभिभूत प्रेम के हैं, क्योंकि उन्हें वह कृपा मिली है जिसे स्वयं ब्रह्मा भी आदेश न दे सके। और यहाँ इस कथा का गहनतम रहस्य प्रह्लाद के विस्मय से प्रकाशित होता है — कि भगवान योग्यता को वैसे नहीं मापते जैसे संसार मापता है। वे उन्हीं असुरों के रक्षक बन जाते हैं, उनके दुर्ग के पालक, उनके निर्वासन में सदा उपस्थित संगी, क्योंकि उनकी कृपा एक कल्पवृक्ष है जो किसी शरणागत हृदय को नहीं लौटाता। शुक्राचार्य के वचन शिक्षा को पूर्ण करते हैं: जो किसी भी भेंट को पूर्ण करता है वह हमारे कर्मकाण्ड की निर्दोषता नहीं बल्कि भगवान के नाम का संकीर्तन है, हृदय का उनकी ओर मुड़ना। इस प्रकार जो कथा तीन पग भूमि की एक याचक की माँग से आरम्भ हुई, वह इस आश्वासन के साथ समाप्त होती है कि भगवान की ओर बढ़ाया गया सबसे छोटा निष्कपट कदम — एक प्रणाम, एक नाम, प्रेम से सुनी गई एक कथा — सबसे ऊँचे गन्तव्य को पाने के लिए पर्याप्त है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, वही अभ्यास ग्रहण करें जिसकी शुक्राचार्य प्रशंसा करते हैं और जिसका यह अध्याय वचन देता है: भगवान के नाम का सरल संकीर्तन। कुछ शान्त क्षण निकालकर “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय” को ध्यान और प्रेम से दोहराएँ, यह विश्वास करते हुए, जैसे ऋषि ने सिखाया, कि पवित्र नाम हमारी पूजा की प्रत्येक कमी और हमारे भीतर के प्रत्येक दोष को पूर्ण कर देता है। और जैसे ही आप समाप्त करें, अपने हृदय में उस वचन को पुनः सुनें जिसके साथ वामन-कथा समाप्त होती है — कि जो कोई भगवान की कथा और नाम की ओर, चाहे कितनी ही विनम्रता से, मुड़ता है, वह परम गति की ओर खींचा जाता है।

उपसंहार

तेईसवाँ अध्याय वामन-कथा को किसी विजेता की विजय से नहीं, बल्कि एक भक्त की घर-वापसी से समाप्त करता है: बली अपनी शरणागति को ही परम लाभ मानते हैं, प्रह्लाद भगवान को उन्हीं असुरों का रक्षक बनते देखते हैं जिन्हें उन्होंने पराजित किया था, और शुक्राचार्य पाते हैं कि पवित्र नाम के संकीर्तन में यज्ञ की हर कमी घुल जाती है। ये सभी सूत्र एक ही सत्य की ओर संकेत करते हैं — कि भगवान की कृपा शरणागति का उत्तर देती है, न कि पद या कर्मकाण्ड की निर्दोषता का, और भगवान की ओर बढ़ाया गया सबसे विनम्र कदम भी — एक प्रणाम अथवा प्रेम से दोहराया गया एक नाम — उनकी उपस्थिति का द्वार खोल देता है। इसी के साथ भगवान वामन की प्रसिद्ध कथा पूर्ण होती है, और स्कन्ध आगे दिव्य मत्स्य की कथा की ओर मुड़ता है, जो भगवान के अवतारों में प्रथम है।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), आठवाँ स्कन्ध, तेईसवाँ अध्याय, पृष्ठ 828–832।
- श्रृंखला: श्रीमद्भागवत विज्ञान · बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेख के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठावान पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी और लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के साथ किसी सम्बन्ध अथवा उसके अनुमोदन का कोई अभिप्राय नहीं है।



ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-8-chapter-23-bali-enters-sutala-gods-regain-heaven-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञान · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट